x-x-x-x-x-x-x-x-x-x-x-x-x-x-x-x-x-x-x-x-x-x-x-x-x-x-x-x-x-x-x-x-x

नवम् अध्याय : उपसंहार

x-x-x-x-x-x-x-x-x-x-x-x-x-x-x-x-x-x-x-x-x-x-x-x-x-x-x-x-x-x-x-x-x

9.1 अध्ययन का सार

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध चार भागों में विभक्त किया गया है । जिसके आगे दस अध्याय बनाए गए हैं । प्रथम भाग को तीन अध्यायों में विभक्त किया गया है जो विषय उपस्थापन , सैद्धान्तिक परिप्रेक्ष्य एवं लेखकीय परिप्रेक्ष्य से सम्बन्धित है ।

इस शोध प्रबन्ध के प्रथम अध्याय में शोध के विषय को स्पष्ट करते हुए सम्बद्ध साहित्य का सर्वेक्षण प्रस्तुत किया गया है । विषय की सीमा को स्पष्ट करते हुए अध्ययन के महत्त्व पर प्रकाश डाला गया है ।

दूसरे अध्याय में प्रतीक के सैद्धान्तिक पक्ष पर प्रकाश डाला गया है । जिसमें प्रतीक का अर्थ बताते हुए उसके उद्भव, विकास एवं स्वरूप की जानकारी दी गई है । प्रतीक की परिभाषा को भारतीय एवं पाश्चात्य दृष्टिकोण से स्पष्ट करते हुए प्रतीकों का वर्गीकरण भी किया गया है । प्रतीकों के महत्त्व और कार्य की जानकारी देने के अतिरिक्त प्रतीक एवं साहित्य के सम्बन्ध पर भी प्रकाश डाला गया है ।

तृतीय अध्याय में लेखकीय पक्ष को उभारा गया है जिसके अन्तर्गत अज्ञेय जी के जीवन वृत्त, व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला गया है ।

भाग दो विषय-विवरण एवं विषय-विवेचन से सम्बन्धित है जो चतुर्थ, पंचम , षष्ठ , सप्तम एवं अष्टम अध्यायों में विभक्त है । चतुर्थ अध्याय में विषय का विवरण दिया गया है जिसके अन्तर्गत अज्ञेय जी के उपन्यासों एवं कहानियों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया गया है ।

पंचम अध्याय मनोवैज्ञानिक प्रतीकों से सम्बन्धित है, जिसमें मनोविज्ञान की जानकारी प्राप्त होती है । इसके अतिरिक्त मनोविज्ञानिक प्रतीकों को स्पष्ट करते हुए अज्ञेय जी के उपन्यासों एवं कहानियों की विवेचना मनोवैज्ञानिक प्रतीकों को दृष्टि में रखते हुए की गई है ।

षष्ठ अध्याय सौन्दर्यात्मक प्रतीकों से सम्बन्धित है । साहित्य में सौन्दर्य के स्थान को स्पष्ट करते हुए अज्ञेय जी के उपन्यासों एवं कहानियों का सौन्दर्यात्मक प्रतीकों की दृष्टि से अध्ययन किया गया है ।

सप्तम् अध्याय में प्राकृतिक प्रतीकों की जानकारी दी गई है जिनके अन्तर्गत प्रकृति को आधार बनाकर अज्ञेय जी के उपन्यासों एवं कहानियों का प्राकृतिक प्रतीकों की दृष्टि से विवरण प्रस्तुत किया गया है ।

अष्टम् अध्याय संरचनात्मक प्रतीकों का है जिसके अन्तर्गत अज्ञेय जी के उपन्यासों एवं कहानियों की संरचना को प्रतीकात्मक दृष्टि से प्रस्तुत किया गया है ।

तृतीय भाग उपसंहार से सम्बन्धित है जिसके नवम् अध्याय में अध्ययन का सार, उपलब्धियों एवं निर्णयों और शोध संकेत को स्पष्ट किया गया है ।

चतुर्थ भाग परिशिष्ट से सम्बन्धित है जिसमें मूल ग्रंथों की सूची, सहायक संदर्भ सूची संलग्न की गई है ।

9.2 उपलब्धियां एवं निर्णय

प्रतीक किसी विचार, भाव या अनुभव का दृश्य या श्रव्य चिन्ह है । अमूर्त, अदृश्य, अश्रव्य, अप्रस्तुत विषय का प्रतिविधान प्रतीक मूर्त, दृश्य श्रव्य, प्रस्तुत

विषय द्वारा करता है । अर्थात् प्रतीकों के द्वारा मन में उठे ऐसे भावों को व्यक्त किया जाता है जिन्हें सरल भाषा द्वारा अभिव्यक्ति नहीं मिलती । प्रतीक मूलत: चिन्ह है । प्रतीकों के प्रयोग से भाषा में जटिलता तो अवश्य आ जाती है लेकिन साथ ही उसमें सुसंगठितपन भी आ जाता है अर्थात् व्यर्थ का विस्तार नहीं होता । साहित्य के क्षेत्र में भी प्रतीकों का अपना यथेष्ठ स्थान है । यह कोई नवीन प्रयोग नहीं । प्रतीकों का प्रयोग अति प्राचीन काल से चला आ रहा है । लेकिन यह विषय और आवश्यकता के अनुकूल परिवर्तित होता रहता है ।

आधुनिक हिन्दी साहित्य में अज्ञेय एक ऐसा नाम है जो न केवल बहुचर्चित और बहुप्रशंसित है अपितु हिन्दी जगत् में अपनी सत्ता और महत्ता रखता है । आधुनिक साहित्यकारों में अज्ञेय ऐसे साहित्यकार हैं, जिन्होंने काव्य, उपन्यास, नाटक, कहानी और कतिपय अन्य गद्य की विधाओं में अपने अनुभूत सत्य को अभिव्यक्त किया है । अज्ञेय मूलत: कवि माने जाते हैं किन्तु यदि ध्यान से देखें तो वे इतने ही महत्वपूर्ण और सजग कथाकार भी हैं । यह ठीक है कि उन्होंने कथा साहित्य अधिक प्रस्तुत नहीं किया किन्तु यह भी सत्य है कि उनका लिखा हुआ जो भी और जितना भी कथा लेखन के रूप में हमारे सामने है वह अपनी गुणवत्ता और विशिष्टता के कारण सबसे अलग है उनके द्वारा लिखे गए कथा-साहित्य में मनोविज्ञान और अस्तित्ववादी दर्शन का स्वर स्पष्ट सुना जा सकता है ।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में अज्ञेय के कथा-साहित्य का प्रतीकों की दृष्टि से अध्ययन किया गया है । इस अध्ययन के लिए मनोवैज्ञानिक , सौन्दर्यात्मक, प्राकृतिक एवं सरचनात्मक प्रतीकों को आधार बनाया गया है । यही इस शोध प्रबन्ध की उपलब्धि है । अज्ञेय जी ने इन प्रतीकों के द्वारा अपने अंतर्मन में होने वाली ऊहापोह को अभिव्यक्त किया है । अज्ञेय जी के साहित्य की भाषा सरल स्पष्ट न होकर प्रतीकों से सुसज्जित है । अर्थात् अंतर्मन में उठने वाली ऐसी बात

जो सरल स्पष्ट भाषा द्वारा व्यक्त करनी असमर्थ थी उसे व्यक्त करने के लिए प्रतीकात्मक शैली का सहारा लिया ।

अज्ञेय ने अपने कथा-साहित्य में मनोवैज्ञानिक , सौन्दर्यात्मक, प्राकृतिक एवं संरचनात्मक प्रतीकों का प्रयोग भरपूर मात्रा में किया है। अज्ञेय की मनोवैज्ञानिक धारणा फ्रायड से प्रभावित है । मनोविज्ञान की मान्यताओं के अनुसार प्रतीक अवचेतन की दमित कामनाओं से उत्थित तथा रूपान्तरित होकर अभिव्यंजना समर्थ होते हैं । अज्ञेय ने अपने कथा-साहित्य में मनोवैज्ञानिक प्रतीकों को अचेतन भाव, काममूलक, स्वप्न तथा यौन भावों को आधार बना कर प्रस्तुत किया है । अज्ञेय मनोवैज्ञानिक प्रवृति के कथाकार होने के कारण उनका कथा-साहित्य भी मनोविज्ञान से ओत-प्रोत है ।

मनोवैज्ञानिक प्रतीकों के साथ-साथ उन्होंने सौन्दर्यात्मक प्रतीकों से भी अपने कथा-साहित्य को सुसज्जित किया है । "शेखर: एक जीवनी" में उसके नायक "शेखर" की जीवनी को प्रस्तुत किया गया है जिसके लिए अज्ञेय सौन्दर्यात्मक प्रतीकों का भी सहारा लिया है । "नदी के द्वीप" में भी रेखा, गौरा और भुवन के सम्बन्धों को स्पष्ट करने के लिए सौन्दर्यात्मक प्रतीकों का प्रयोग किया गया है । लेकिन "अपने-अपने अजनबी" में इन प्रतीकों का अभाव सा लगता है । क्योंकि यह उपन्यास "मृत्यु से साक्षात्कार" को दृष्टि में रखकर लिखा गया है जो पूर्णत: त्रासदी से ग्रस्त है ।

अज्ञेय ने अपने कथा-साहित्य को प्राकृतिक प्रतीकों से भी अछूता नहीं रखा । उनके उपन्यास एवं कहानियां प्रकृति दृश्यों को अपने में संजोये हुए है जो बात अज्ञेय स्पष्ट भाषा में न कह सके उसके लिए उन्होंने प्राकृतिक प्रतीकों का सहारा लिया । उन्होंने जल, नदी, पर्वत, घास, शाद्वल, वन उपवन, चिड़िया, हाथी, बन्दर इत्यादि अर्थात् प्रकृति के जड़ एवं चेतन दोनों रूपों को अपने कथा-साहित्य में

स्थान दिया है । संरचनात्मक प्रतीकों द्वारा अज्ञेय ने अपने कथा-साहित्य की रचना भाषा को स्पष्ट किया है ।

अत: स्पष्ट हो जाता है कि प्रतीक को केन्द्र बिन्दु मानकर अज्ञेय ने अपने कथा-साहित्य में जिन विभिन्न प्रतीकों को प्रतिपादित किया है, वे कथा-साहित्य के विकास में पूर्णत: सक्षम है और इस दृष्टि से अज्ञेय का कथा-साहित्य उत्कृष्टता की कसौटी पर पूर्णत: सही उतरता है । अज्ञेय के साहित्य को प्रतीक बहुल साहित्य कहा जाए तो कोई अत्युक्ति नहीं होगी ।

9.3 शोध-संकेत

अज्ञेय की ही भान्ति किसी अन्य लेखक के सम्पूर्ण साहित्य तथा साहित्य की अन्य विधाओं में इस दृष्टि से अध्ययन महत्वपूर्ण सिद्ध होगा ।

इस अध्याय में चारों मुख्य पात्रों के माध्यम से प्रेम दर्शन को अभिव्यंजित किया गया है। प्रतीकात्मकता इस उपन्यास में सशक्त शिल्प उपकरण बनकर प्रयुक्त हुई है । अज्ञेय के प्रतीक वैयक्तिक प्रतीक है । द्वीप और नदी प्रतीक है तथा समस्त कथ्य में अनुस्यूत रहते हैं । विभिन्न स्वभाव के पात्र द्वीप है, उनकी विभिन्न स्थितियां द्वीपवत् है तथा जीवन का प्रवाह नदी है । इस प्रौढ़ प्रतीक के साथ-साथ अपने संदर्भों में सार्थक अनेक सशक्त प्रतीकों ने अभिव्यंजना क्षमता को परिपुष्ट किया है ।